कहानी - द अदर मदर **अनन्या माँ**

**संजय वशिष्ठ**

रात के 12 बजे, घायल गाय की गुहार...
सारे दिन की गौ सेवा व थकान के बाद इरिना अपने कमरे में मच्छरदानी में गहरी नींद के आगोश में थी। कमरे में गौशाला की ओर वाली दीवार पर एक 3x3 वर्ग फीट का जंगला (खिड़की) था। रात के करीब 12 बजे, एक गाय जंगले में मुंह रगड़ कर आवाज कर रही थी और बार-बार सोती हुई इरिना की ओर रहस्यमयी ढंग से देख रही थी। गाय की आवाज से यकायक इरिना की नींद टूट गई। अनायास इरिना का ध्यान गाय पर गया।

इरिना: "अरे क्या हुआ? क्या परेशानी है? सब ठीक तो है?" (कहती हुई वह तुरंत बाहर गाय के पास आती है)। गाय के सींगों की जड़ में गहरी चोट लगी थी, खून रुक नहीं रहा था। इरिना 'फर्स्टएड' का बॉक्स उठा लाती है और चिंता करते हुए घाव को साफ करती है।

इरिना: "अरे! ये किसने तुम्हें घायल किया? तुम हमेशा धानों (अन्य गाय का नाम) से भिड़ती रहती हो, आखिर क्या चल रहा है तुम्हारा? रात को भी चैन नहीं, मुझे ये सब पसंद नहीं..." (वह दवाई लगा पट्टी लगा देती है और गाय को आदेश देती है, "चले जाओ और सुनो, धानों से झगड़ा न किया करो।") गाय वहां से चली जाती है।

**इरिना को राष्ट्रीय सम्मान की खबर समाचार पत्रों में...**
देश के सभी अखबारों में 2019 के लिए इरिना को राष्ट्रीय पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित करने की घोषणा की खबर छपी थी, जिसे पढ़कर गौ सेवा से जुड़े हुए सभी सेवक एक नई ऊर्जा से भर गए। इरिना के विशेष साक्षात्कार के लिए राधा सुरभि गौशाला में पत्रकार आ रहे थे। चारों ओर उत्साह का वातावरण था। इस अवसर पर पत्रकारों से बात करते हुए इरिना अपनी कहानी बताते हुए भावुक हो गई। उन्होंने सरकार के प्रति आभार व्यक्त किया और इसे गौ सेवा व ईश्वर का आशीर्वाद बताया।

**पद्म पुरस्कार वितरण समारोह...**
राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली में 2019 के पद्म पुरस्कारों के वितरण का कार्यक्रम चल रहा था, जिसमें इस साल विशिष्ट समाज सेवाओं में पशुपालन के लिए पद्म पुरस्कार समिति ने फ्रेड्रिक इरिना ब्रूनिंग अर्थात सुदेवी माताजी को उनकी उत्कृष्ट गौ सेवा के लिए पद्मश्री राष्ट्रीय सम्मान प्रदान करने की संतुति की थी।
"पद्म पुरस्कार देश के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कारों में एक है। यह तीन श्रेणियों अर्थात पद्म विभूषण, पद्म भूषण और

पद्मश्री में प्रदान किया जाता है। किसी भी क्षेत्र में विशिष्ट सेवा के लिए पद्मश्री पुरस्कारों की घोषणा हर वर्ष गणतंत्र दिवस के अवसर पर की जाती है। ये पुरस्कार भारत के राष्ट्रपति द्वारा औपचारिक समारोह में प्रदान किए जाते हैं, जो आमतौर पर हर साल मार्च / अप्रैल के आस-पास राष्ट्रपति भवन में आयोजित होते हैं। पद्मश्री सूची में विदेशी, एनआरआई, पीआईओ, ओसीआई श्रेणी के व्यक्तियों को भी प्रदान किया जाता है। इसमें एक प्रमाण पत्र और एक पदक दिया जाता है। पद्मश्री 'विशिष्ट सेवा' के लिए प्रदान किए जाने वाला भारत का चौथा सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार है। प्राप्तकर्ताओं को पदक की एक प्रति भी दी जाती है, जिसे वे चाहें तो किसी भी समारोह के दौरान पहन सकते हैं। अलंकरण समारोह के दिन प्रत्येक पुरस्कार विजेता के संबंध में संक्षिप्त विवरण देने वाला एक स्मारक विवरणिका भी जारी की जाती है।"

इस वर्ष इरिना को यह पुरस्कार तत्कालीन माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद द्वारा प्रदान किया गया, जिसमें विदेशी श्रेणी में उन्हें एक प्रमाणपत्र और पदक से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर पत्रकारों से बात करते हुए इरिना अपनी कहानी बताते हुए भावुक हो गईं। उन्होंने सरकार के प्रति आभार व्यक्त किया और इसे गौ सेवा व ईश्वर का आशीर्वाद बताया।

जब वे वापस राधा सुरभि गौशाला में पुरस्कार लेकर लौटीं, तो उन्हें गौशाला सेवकों, गांववालों और पत्रकारों ने घेर लिया और बधाई दी। वे पद्मश्री प्रमाणपत्र को लेकर गायों के बीच हाथों में उठाकर चिल्लाईं, "इसमें मेरा कुछ नहीं है, ये तो गायों का है।"

यह महत्वपूर्ण है कि इरिना का जीवन आज के मानव के लिए प्रेरणा स्रोत है, जिसमें प्रकृति, प्रेम, सत्य, समर्पण, सुमिरन, सेवा की प्रेरणा मिलती है।

**सरकार द्वारा इरिना को भारत छोड़ने का आदेश...**

इरिना पद्मश्री से सम्मानित हो चुकी थीं। 27 मई, 2019 को न्यूज एजेंसी एएफपी की रिपोर्ट के अनुसार विदेश मंत्रालय भारत सरकार द्वारा उनके वीजा विस्तार से इनकार कर दिया जाता है। इरिना एक एम्बुलेंस से एक सहायक के साथ गौशाला के गेट पर उतरती हैं और अपने साथ लाए एक घायल बछड़े को उतारने का आदेश देती हैं। जैसे ही वह अपने कार्यालय में पहुंचती हैं, उन्हें अपने टेबल पर विदेश मंत्रालय भारत सरकार का एक पत्र मिलता है, जिसमें उनके वीजा विस्तार पर इन्कार किया गया था, और कहा गया था कि वह अवैधानिक रूप से भारत में नहीं रह सकतीं क्योंकि वह विद्यार्थी वीजा पर भारत आई थीं।

इस पत्र को देखकर इरिना पीड़ा से भर जाती हैं और अगले दिन गौशाला में आए समाचार पत्रों के माध्यम से घोषणा कर देती हैं कि वह अपने पद्मश्री जैसे राष्ट्रीय सम्मान को भी वापस कर देंगी। पत्रकारों के माध्यम से भारतीय जनता पार्टी की लोकसभा सांसद हेमा मालिनी तक यह बात पहुंच जाती है। देश के छोटे-बड़े अखबारों एवं न्यूज एजेंसी पीटीआई के माध्यम से खबर पूरे देश में फैल जाती है और तत्कालीन विदेश मंत्री भारत सरकार श्रीमती सुषमा स्वराज के संज्ञान लेने पर 'विद्यार्थी वीजा' को 'वर्क वीजा' में बदल दिया जाता है। सांसद हेमा मालिनी इरिना को बधाई देती हैं।

पुनः पत्रकारों से बात करते हुए इरिना कहती हैं कि "मैंने आक्रोश में पद्म पुरस्कार लौटाने की बात कह दी थी, जिसके लिए मैं क्षमा चाहती हूं। पुरस्कार मेरी सेवा तपस्या का फल है, मैं भारत में रहकर आजीवन गौ सेवा करना चाहती हूं।"

**पत्रकार द्वारा इरिना के भारत आगमन के संबंध में जिज्ञासा...**

कन्हाई गांव में सुबह का समय, भोर में मंदिर से घंटी, आरती की आवाज, गौ पूजा, शंखनाद, घरों में स्कूल जाने के लिए बच्चों का तैयार होना, खेतों की ओर जाते किसान, पशुओं को खाना देते किसान।

सुबह के 9:00 बजे हैं और गौशाला में एक पत्रकार का आगमन होता है। वह इरिना से भारत सरकार से प्राप्त पद्मश्री के संदर्भ में और उनके पूर्व के जीवन के संबंध में प्रश्न पूछता है।

**नन्ही इरिना का जन्मदिन**

आज इरिना का जन्मदिन है। उसे याद आ रहा था कि जर्मनी के बर्लिन शहर में कैसे उसके बचपन में माता-पिता जन्मदिन पूरे उत्साह से मनाते थे। यह यादों में खोई हुई वह एक गाय पर हाथ फेर रही थी। न जाने क्यों अचानक वह भावुक हो गई। पुरानी यादों ने उसे उद्वेलित कर दिया। उसकी आंखों से आंसू रुक नहीं पा रहे थे। तभी गाय, न जाने कैसे, उसकी व्यथा को समझ गई और इरिना को चाट-चाट कर प्यार करने लगी। चारों ओर कई वृक्ष, धीरे-धीरे बहती बयार, रात की रानी के फूलों की गंध से हवा तर हो गई। ऊपर स्वच्छ तारों से भरा आसमान और चंद्रमा सब देख रहे थे। इरिना छत पर जाकर टहलने लगी। वह गुरु मंत्र का जाप करने का भरसक प्रयास कर रही थी,

लेकिन न जाने क्यों पुरानी यादों ने हमला बोल दिया। अंततः उसके मस्तिष्क पटल पर माता-पिता के चेहरे उभर आए। उसका दिल भर आया, और आंसू रुकने का नाम नहीं ले रहे थे। वह समझ नहीं पा रही थी कि क्या करे।

**माता-पिता की याद**

कई बार इरिना को बर्लिन में अपने माता-पिता की याद आ जाती थी। घर में क्या कमी थी? क्यों वह कृष्ण के प्रेम में खोकर हजारों किलोमीटर दूर भारत में आ गई? यहां कठिन जीवन जीने लगी। चिंतनशील मुद्रा में वह यमुना किनारे गायों के साथ घूमती रहती थी। समय के फलक पर छूटे अमिट पदचिन्हों की भांति ही रेत पर बनने वाले उसके पदचिन्ह भी स्पष्ट और गहरे थे। टहलते-टहलते वह पुनः नदी किनारे पड़े पेड़ के तने पर बैठ जाती और लगातार गुरु मंत्र का जाप करते हुए खो जाती। जंगल में स्थित बेरों को खाकर मस्त रहती और मौसम में जामुन उसे प्रिय थे। शाम गहराने के समय वह वापस गायों को लेकर लौटती। लौटते समय उसे धूल और पेड़ों से गिरी सूखी पत्तियों से गुजरना पड़ता। गायों के गले में बंधी घंटियों की आवाज से पूरा वातावरण सराबोर हो जाता। वापस लौटते समय कौओं का कोहराम सुनना उसे अच्छा लगता था। धूल के गुबार से गुजरती गायों को देखना उसे अलग ही आनंद देता था। दूर किसी मंदिर से आती शंख-कीर्तन की आवाज उसके ध्यान को बांध लेती थी। वह मीरा जैसी हो जाती, जिसने गाया था, "मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई रे...! साधु-संत बैठ गई, सुध-बुध खोई रे।"

**हकीम अजमल खान का बेटे अली हसन से इरिना का परिचय कराना**

इरिना: "हकीम खान, बहुत दिनों में आए।"
हकीम अजमल: "गुड मॉर्निंग माताजी... आज मैं अपने बेटे अली हसन को आपकी शरण में छोड़ने आया हूं। माताजी, इसने जानवरों की डॉक्टरी का कोर्स किया है। इसे अपनी सेवा में रखें। यह यहां आपकी गौशाला में गौ सेवा का कार्य करेगा।"
इरिना: "ठीक है, हकीम, इसे कह दो छुट्टी न करे। मेरी गायों को यह पसंद नहीं। वे माइंड कर जाती हैं।"
हकीम अजमल: (हंसते हुए) "सुन ले बेटा, माताजी क्या कह रही हैं।"

विदेशी भक्तों की टोली और बच्चों की शरारत
मंदिर के पास मैदान में बच्चों की मटरगश्ती चल रही है। धूप कम हो रही है, वहीं पास के चबूतरे पर जानवरों का डॉक्टर अली हसन अपनी लेडी साइकिल को दीवार के सहारे लगाकर, डायरी में दवाइयों का हिसाब लिख रहा है। साइकिल पर 'फूलों' की मेटल प्लेट लगी है। डॉ. हसन ने खाकी रंग की हैट, कमीज और निक्कर पहन रखी है।

कुछ बच्चे उसकी दीवार के साथ खड़ी साइकिल को ले भागने की फिराक में हैं, तभी एक बच्चा धीरे-धीरे आता है और अली हसन की साइकिल को चुपके से ले जाने लगता है, लेकिन वहीं पर बैठे काले कुत्ते को यह सहन नहीं होता और वह भौंकने लगता है। उसकी आवाज से जैसे ही अली हसन का ध्यान उस तरफ जाता है, वह साइकिल ले जाते हुए बच्चे को भागकर पकड़ लेता है और चिल्लाता है, "ठहर बदमाश, अभी तुझे इंजेक्शन लगाता हूँ, वो भी 'सांड वाला', तेरे बाप को पता चलेगा, तो रोता फिरेगा।" बच्चा उससे छूटकर दूर भाग जाता है। तभी वहां आकाश में एक तोता 'फूलों' चिल्लाते हुए निकलता है। अली हसन बड़बड़ाते हुए कहता है, "मुझे पता है सालों, तुम सब एक ही थाली के बैंगन हो।" तभी अली हसन का ध्यान वहाँ खड़े विदेशियों की ओर जाता है। अली हसन हँसते हुए हाथ हिलाता है और बैग उठाकर साइकिल पर सवार होते हुए इरिना की गौशाला की ओर बढ़ जाता है।

**अली हसन और लोटन बाबा**

भरी दुपहरी का समय है। बच्चे गौशाला के पास हैं, इतने में कोयल की कू-कू आवाज, फिर मोर की और फिर कौओं की आवाजें आने लगती हैं। सारे बच्चे पेड़ों पर खोज रहे हैं कि आखिर ये पक्षियों की आवाजें कहाँ से आ रही हैं। वे आश्चर्यचकित हैं। उन्हें यह नहीं पता कि झाड़ियों के पीछे छुपा अली हसन ये आवाजें निकाल रहा है। ऐसी शरारत करने में हसन को बड़ा मज़ा आता है। लोटन बाबा अली हसन को फोन करता है। अली मोबाइल उठाता है।

लोटन बाबा: "अरे! अली, लोटन बोल रहा हूँ।"

अली हसन: (फोन से मोर की आवाज में) "पीहू, पीहू, कू-कू-कू..."

लोटन बाबा: "अरे! साला, अली का मोबाइल पक्षियों ने चुरा लिया है... अरे, अली, लोटन को उल्लू मत बनाओ। आज गाय के दूध की लस्सी का वादा था। ये सब ड्रामा बंद कर। तुम्हें पता नहीं, लोटन बाबा को उल्लू बनाना नामुमकिन है। मुमकिन एक ही शख्स बना सकता है दुनिया में, समझे?"

अली हसन: (हंसते हुए) "बाबा माफ करें, मैं अभी गौशाला जा रहा हूँ। तुम्हारे काम के लिए..."

लोटन बाबा: "बेटा, मुझे सब पता है, तुम बेला से मिलने जा रहे हो। जब तक ससुर जोरावर गन्ने से पिटाई करेगा, तब तक तुम ये मोहब्बत नहीं छोड़ोगे, बेटा..."

अली हसन: (हंसते हुए) "सरफ़रोशी की तमन्ना आज हमारे दिल में है।"

**गौ अनुसंधान संस्थान मथुरा में राष्ट्रीय सम्मेलन**

यूपी पंडित दीनदयाल उपाध्याय पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय एवं गौ-अनुसंधान संस्थान, मथुरा, उत्तर प्रदेश के सभागार में भारतीय गौवंश की विशेषताओं पर चर्चा चल रही है, जिसमें इरिना, डॉक्टर अली हसन और उसके

अब्बू हकीम अजमल खां भी आमंत्रित हैं।

कार्यक्रम के संयोजक, गोपाल: "राधे-राधे, बृज के महापर्व जन्माष्टमी के अवसर पर मैं आपका हार्दिक स्वागत करता हूँ। जैसा कि आप जानते हैं, इस किसानों और ग्वालों की कार्यशाला का विषय भारतीय गौवंश की विशेषताओं पर केंद्रित है। इसमें भगवान श्रीकृष्ण की प्रिय गौ माता की विशेषता पर भारत सरकार के पूसा संस्थान, नई दिल्ली से आए विशेषज्ञ, डॉ. सत्य प्रकाश, भारतीय गौवंश पर प्रकाश डालेंगे। मैं पुष्पगुच्छ द्वारा मंच पर उनका स्वागत करता हूँ।" (तालियों की गड़गड़ाहट से स्वागत होता है)

डॉ. सत्य प्रकाश: "राधे-राधे, धन्यवाद गोपाल जी। यहाँ उपस्थित सभी गणमान्य अतिथियों, गौ सेविका इरिना, हकीम अली हसन, गाँव प्रधान और बहनों-भाइयों, जैसा कि आप जानते हैं, भगवान श्रीकृष्ण की प्रिय गौ माता भारत के आत्मतत्व में है, आधार में है। साधु-संत और फकीर ही नहीं, अपितु भारत के किसान और जवान गौ माता को एक अदर-मदर के रूप में जानते हैं। पुराने समय से न जाने इस माँ ने कितने बच्चों को पालन-पोषण कर सबल बनाया, जिससे वे देश की रक्षा और कार्य में सफल हो सके। आज माँ का पवित्र दूध ही नहीं, अपितु पवित्र मूत्र और गोबर धरती की संजीवनी बन गए हैं और इसे अधिक उपजाऊ और प्रदूषण रहित बना रहे हैं। ऑर्गेनिक खेती के इस समय में गाय का गोबर अधिक महत्वपूर्ण हो गया है।..."

**लोटन बाबा और पवित्र कामधेनु के बारे में चर्चा**

लोटन बाबा सर्दियों में कम्बल ओढ़े, हाथ में सिगरेट लगाए गुनगुनी धूप सेक रहे हैं। उनके चेले उन्हें घेरे हुए उनकी विशेष ज्ञान की बातें सुन रहे हैं। वातावरण रहस्यमय हो जाता है।

लोटन बाबा: "अरे छोरा, यहाँ कुछ खास तो है ब्रजभूमि में...। मुझे पहले कुछ भी नहीं पता था, एक दिन एक बाबाजी ने मुझे बताया कि लोटन, वो है तो यहीं कहीं, किसी के पास। बहुत पहुंचे हुए बाबाजी थे, हिमालय से आए थे।"

एक चेला: "बाबाजी, गौशाला तो यहाँ सैकड़ों हैं, हो सकता है उनमें से किसी के पास हो?"

लोटन बाबा: "अरे चौबे, वो ऐसी-वैसी गाय नहीं, उसे तू देख ले न तो पार हो जाए, जीवन सफल हो जाए। वैसे तो मूल रूप से स्वर्ग में रहती है। हां, समुद्र मंथन से प्रकट हुई, सारे 33 करोड़ देवता हैं उसके अंदर। उसके बिना देवी-देवताओं का भी स्वर्ग में मन नहीं लगता, स्वर्ग में सारे देवी-देवताओं के फ्लैट खाली पड़े हैं, ससुरे!" (सब हंस पड़ते हैं)

दूसरा चेला: "बाबाजी, आपके रहते, हम देख पाए तो?"

लोटन बाबा: "अरे गधे! आसान नहीं, हाँ इसमें दो राय नहीं कि वह यहीं है, सशरीर... किसके पास है, पता नहीं?

उसके चार पैर, समझ लो वेद, सींगों में पवित्र भगवान ब्रह्मा, विष्णु, महेश, बेटा उसे देखने मात्र से सब कुछ मिल जाता है...। लंबी सांस लेकर... बेटा दर्शन तो हमें भी नहीं हुए अब तक..."

**सिख परिवार का 'राधाकुंड' मथुरा आगमन, कैंसर ट्रेन**

पिछले दिनों राधाकुंड मथुरा में एक सिख परिवार रहने के लिए आया। यह सबके लिए आश्चर्य का विषय था। यह परिवार किशोर के दोस्त सरदार जगजीत सिंह (जग्गी) का है। परिवार में उसकी छोटी बहन नैन्सी और बूढ़ी माँ सिमरन कौर हैं। किशोर, जग्गी से मिलने जाता है। उनके परिवार के सब लोग वहीं पर हैं। किशोर और जग्गी की बातचीत...

किशोर: "सत श्री अकाल यार जग्गी, बहुत दिनों में मिलना हुआ। आखिर आप सब भठिंडा (पंजाब) से राधाकुंड में रहने क्यों आए? वहाँ क्या दिक्कत है?"

जग्गी: "प्राहजी, पूछो न। वो जगह रहने लायक नहीं रही।"

किशोर: "सब ठीक तो है?"

जग्गी: "पंजाब जैसी तो स्टेट नहीं, गुरुओं और पांच नदियों की अमृत भूमि है पंजाब..."

और पांच नदियों की अमृत भूमि है पंजाब। (पंजाब का जिक्र - 'कैंसर ट्रेन' के कारण कुख्यात हो गया है। मालवा क्षेत्र का यह इलाका अब शापित सा प्रतीत होता है, जहां हजारों लोग खराब पानी और प्रदूषित जमीन के कारण कैंसर और अन्य जानलेवा बीमारियों की चपेट में हैं। लोग इलाज के लिए राजस्थान, चंडीगढ़ और दिल्ली जाने को मजबूर हैं। इस स्थिति का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि बठिंडा से बीकानेर के लिए रात नौ बजे चलने वाली ट्रेन को 'कैंसर ट्रेन' कहा जाता है। मालवा क्षेत्र के कैंसर पीड़ित अधिकतर लोग इसी ट्रेन से बीकानेर जाते हैं ताकि सुबह वहां पहुंच सकें। लगभग रोज 250 लोग, या तो मरीज होते हैं या उनके परिवारजन।)

लेकिन पिछले कुछ वर्षों से न जाने किसकी नजर लग गई...

(इतने में चाय आ जाती है।)

**किशोर:** यार, क्या हुआ?

(चाय पीते हुए)

**जग्गी:** शापित हो गया पंजाब। नशे में यूथ उलझ गया। धरती स्वच्छ न रही। यह सब देखकर हमें अपना प्यारा पंजाब छोड़ना पड़ा, भाई जान! बचेगी तो सब ठीक है। जान है तो जहान है...

**किशोर:** सवाल ये उठता है कि अब यहां आकर तुम्हें कोई रोजगार तो चाहिए...

**जग्गी:** यार, बताओ कोई। वहां तो साडी अच्छी-खासी खेती-बाड़ी थी...

**किशोर:** हां, ऐसा ही काम तुम्हें चाहिए। मैं एक काम करता हूँ, तुम्हें इरिना की गौशाला ले चलता हूँ। वहां तुम किसानों के लिए वर्मीकम्पोस्ट खाद बनाने का काम शुरू कर देना। केंचुआ खाद की केवल 2 टन मात्रा प्रति हेक्टेयर आवश्यक है। केंचुए के शरीर का 85 प्रतिशत हिस्सा पानी से बना होता है और मरने पर ये नाइट्रोजन प्रदान करते हैं। इसके उपयोग से सिंचाई की लागत कम होती है और सब्जी, अनाज की गुणवत्ता में सुधार आता है। वर्मी कम्पोस्ट डेढ़ से दो माह के भीतर तैयार हो जाता है। इसमें 2.5 से 3.1 प्रतिशत नाइट्रोजन, 1.5 से 2.7 प्रतिशत सल्फर, और 1.5 से 2 प्रतिशत पोटाश पाया जाता है। पशुओं के गोबर से बना वर्मी कम्पोस्ट जैविक खेती का उत्तम खाद पदार्थ है। यह पोषण से भरपूर एक उत्तम जैव उर्वरक है। वर्मी कम्पोस्ट वाली भूमि में खरपतवार कम उगते हैं और पौधों में रोग कम लगते हैं। पौधों और भूमि के बीच आयनों का आदान-प्रदान बढ़ जाता है। वर्मी कम्पोस्ट का उपयोग करने वाले खेतों में फसल उत्पादन में 25 से 300 प्रतिशत तक की वृद्धि हो सकती है। मिट्टी में पोषक तत्वों की मात्रा बढ़ जाती है।

इरिना गायों के साथ पहले खेत में, फिर शहर में कूड़े के ढेर पर...

आज रात एक बेहद घायल गाय की सेवा करते हुए इरिना उसे बचा नहीं पाई। वह बहुत थकी और उदास है। तभी उसे नींद आ गई। पहले वह एक सपना देखती है कि वह कहीं खेतों के बीच गाय चरा रही है। तभी गाय रास्ते से भटककर खेतों में घुस जाती है और फसल तबाह करने लगती है। वह उन्हें रोकने का बेहद प्रयास करती है लेकिन असमर्थ हो जाती है। अगले क्षण गांवों से सैकड़ों किसान हाथों में लट्ठ लिए उसकी गायों पर टूट पड़ते हैं। इरिना अकेली उन गायों को बचाने का प्रयास करती है। वह इधर-उधर भाग रही है पर गांववाले उसकी बात बिल्कुल नहीं सुनते... इतने में इरिना की नींद टूट जाती है। वह उठकर बेचैनी से पानी पीती है, फिर सोने का प्रयास करती है। कुछ देर बाद उसे फिर नींद आ जाती है। अबकी बार उसे सपना आता है कि वह कूड़ा बीनने वाले बच्चों के साथ शहर के गारबेज (कूड़ाघर) के सामने कूड़े से प्लास्टिक की थैलियां बीन रही है। वह फटेहाल है। पास में कुछ गायें गंदे कूड़े के ढेर पर मुंह मार रही हैं। वह गायों को देख भावुक हो जाती है। उन गायों को प्यार करने लगती है,

रोने लगती है, "हाय गौ माँ! तेरी ये हालत हो गई..." इतने में एक म्यूनिसिपैलिटी ट्रक वहां आता है। ट्रक से बाहर मुंह निकालकर ड्राइवर चिल्लाता है, "ऐ पागल! हट यहां से..." उसका सपना टूट जाता है। वह बेहद चिंतातुर है।

**स्वामी रामआसरे दास का इरिना गौशाला में आगमन...**

इरिना से बातचीत करते हुए स्वामी रामआसरे दास कहते हैं:

**स्वामी रामआसरे:** देखो, देवी माँ, मुझे साधना में पता चला है कि वह अनूठी गाय आपके क्षेत्र में ही है। भगवान श्री कृष्ण की कृपा से कामधेनु आज भी यहीं है। यदि वह आपके पास है तो मुझे दर्शन कराओ... मेरा जीवन सफल हो जाएगा।

इरिना कुछ नहीं बोलती, मूक, हाथ जोड़कर क्षमा मांगती है। बाबा नाराज हो जाते हैं और उठकर खड़े हो जाते हैं...

**स्वामी रामआसरे:** अरे इरिना! मेरी साधना में कमी है जो तू मुझे मना कर रही है...! मैं फिर हिमालय जा रहा हूँ। तू रामआसरे को नहीं जानती, सही वक्त पर आऊंगा!

वर की बीमार भैंस का इलाज...
जानवरों का डॉक्टर, डॉ. अली हसन, अपने घर की रसोई में काम कर रहा है और पिंजड़े में लटका उसका बिगड़ैल तोता, जो उसे चिढ़ाने में माहिर है, लगातार बोल रहा है...
अम्मी कह रही थीं, "अली का ध्यान रखना, यह ड्यूटी है। यह ड्यूटी है।"
अली हसन के हकीम अब्बू मूसल से कोई दवाई कूट रहे हैं।
तोता: "अली, तुझे ठिकाने लगा दूंगा, अली ठिकाने लगा दूंगा... ठिकाना..."
अली हसन (चिढ़ते हुए): "अबे साले, ठिकाने तो मैं लगाऊंगा तुझे। यह तो अम्मी बांध गईं मेरे सिर पर, नहीं तो तुझे अभी तक 72 हूरों के पास पहुंचा देता। अब्बू, समझा लो इसको। इसके लिए कोई दवाई है तो दो, नहीं तो जानवरों वाला इंजेक्शन लगाकर बकरी बना दूंगा साले को।"
तोता बोले जा रहा है और अली हसन गुस्से में एक कटोरी में चने की दाल और मिर्च पिंजड़ा खोलकर सरका देता है। यह उसकी रोज की ड्यूटी है।
तोता: "थैंक यू... ठिकाने लगा दूंगा... हें हें... टिउं, टिउं..."
हकीम अजमल (हंसते हुए): "अरे यार, क्यों नाराज होते हो, थैंक यू तो बोला। तेरा छोटा भाई है।"

आज अली हसन गाँव के ज़मींदार जोरावर (जोरा), जिसकी भैंस बीमार है, वहाँ साइकिल से निकल पड़ता है। वहाँ पहुंचकर गेट का कुंडा बजाता है। जोरावर की सुंदर बेटी बेला दरवाजा खोलती है।

बेला (मजाकिया लहजे में): "दो दिन से भैंस बीमार है और तुम अब आए हो... भैंस मैडम तुम्हें याद कर रही थी। रूठी बैठी है, कह रही थी, जब तक अली हसन नहीं आएंगे, कुछ नहीं खाऊंगी।"

इतने में अचानक पाँच कुत्ते अली हसन पर टूट पड़ते हैं। उसका बैग नीचे गिर जाता है और बड़ी मुश्किल से बेला चिल्लाती है, "अरे छोड़ो गधों, डॉक्टर साहब हैं। अपने डाकसाहब को भी नहीं पहचानते गधों।"

अली हसन (संभलते हुए): "अरे इंसान तो पहचान नहीं रहे, ये चोर क्या पहचानेंगे।"

बेला (मजाकिया अंदाज़ में): "चलो डॉक्टर साहब, बचा लिया तुम्हें इन कुत्तों से और आपको लगने वाले इंजेक्शन से भी। अब तो बचा लिया, लेकिन आगे से उम्मीद मत करना। किसी दिन ये तुम्हारी सर्जरी कर ही देंगे।"

अली हसन (संभलते और नाराज होते हुए): "हां, हां, कुत्तों से सर्जरी करा लो मेरी, तुम हाथ मत लगाना। चलो बताओ, कहां है मेरा पेशेंट?"

बेला पास में बंधी भैंस को दिखाने लगती है और प्यार से अली हसन से चाय-पानी पूछती है। उसे पता नहीं होता कि उसके पीछे उसका बाप जोरावर गुस्से में खड़ा है।

जोरावर: "हां, हां, इसे यहीं पर खिला दे, अरे भैंस का इलाज करा और जाने दे जल्दी से, समझी?"

अली हसन चुपचाप भैंस के परीक्षण में लग जाता है। वह जोरावर की तरफ देखता भी नहीं। इससे पहले कोई बात बड़ी, बेला वहां से बाहर चली जाती है।

जोरावर का नौकर 'भग्गू' अली से दवाइयों के बारे में समझने लगता है। राधा सुरभी गौशाला में ‘वेट’ क्लिनिक...

**ग्रामीण:** डॉक्टर साहब, राधे-राधे।

**अली हसन:** राधे-राधे, क्या हुआ...?

**ग्रामीण:** सर, मेरी गाय बियाने वाली है... डॉक्टर साहब, आपका आशीर्वाद चाहिए, जिससे कोई दिक्कत न हो।

**अली हसन:** देख भैया! बच्चे के तुरंत बाद ही बहुत सावधानी रखने की जरूरत है। जन्म होते ही बछड़े से जुड़ी नाल को उसके शरीर से लगभग 2.5 से.मी. की दूरी पर धागे से बांध देना चाहिए और इस गांठ से एक सें.मी. नीचे से इसे काट देना, समझे? कटे हिस्से पर 3-4 दिन तक ये लो, एंटीसेप्टिक लगाना, ठीक है। सुनो, पैदा होने के एक घंटे के भीतर बछड़े को खीस पिलाई जाती है और अगले पांच दिनों तक रोज। खीस में गामा-ग्लोबुलिन नामक एंटीबॉडीज पाई जाती हैं, जिससे बछड़े को कोई रोग नहीं होता।

**ग्रामीण:** ठीक है, डॉक्टर साहब।

**अली हसन:** और सुनो, अगर खीस न हो तो दो अंडों को 30 मि.ली. अरंडी के तेल में मिलाकर पिला दो। भाई, गाय गर्भावस्था में है, महिला से भी ज्यादा देखभाल की जरूरत है। उसका गर्भकाल करीब 280 से 285 दिनों तक होता है। घर में कोई पढ़ा-लिखा हो तो इसका हिसाब रखे, जिसमें गर्भाधान की तिथि, गैया को एक शांत, स्वच्छ, अच्छे बिछावन वाले आरामदायक बाड़े में स्थानांतरित करना चाहिए। हल्का सुपाच्य आहार देना चाहिए।

**ग्रामीण:** तो डॉक्टर साहब, ये कैसे पता चलेगा कि गैया बियाने वाली है?

**अली हसन:** देखो! ये सब थनों के आकार का बढ़ना, बाहरी जननांगों में सूजन एवं साफ स्राव, पूंछ की जड़ों की मांसपेशियों का ढील पड़ने से पता चलता है। ऐसे समय में गैया को अन्य पशुओं से अलग सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए और बिल्ली-कुत्तों से उसकी सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए। ज्यादा कोई दिक्कत हो तो मैं हमेशा इरिना की इस गौशाला में मिलता हूँ, तू तुरंत मुझे बुला लेना।

## इरिना गायों को चराने यमुना तट पर

इरिना गायों को लेकर यमुना तट पर गई है। वह निर्मल बहती यमुना के पानी में पैर डाल कर बैठी अपने आराध्य भगवान श्रीकृष्ण के विषय में सोच रही है कि भगवान श्रीकृष्ण भी उसी की तरह कभी-कभी यमुना किनारे बैठते होंगे, मयूर नृत्य करते होंगे, फिर कृष्ण अपनी कमर से बंधे वस्त्र से बांसुरी निकालकर अधरों पर रखकर पलकें गिरा, बांसुरी बजाते होंगे और फिर बांसुरी अपने सौभाग्य पर इतरा जाती होगी। उनकी प्रिय गायें मंत्रमुग्ध होकर आनंद में खो जाती होंगी। सहसा यमुना में एक तेज लहर उनके पैरों को भिगोने आती होगी। तभी छोटी मछली उनके पैरों को छू जाती है, तभी इरिना के पीछे चर रही गाय की 'माँ'... की आवाज ने इरिना को जगा दिया।

जब भी इरिना गाय चराने यमुना तट पर जाती है, राम खिलावन बिना कुछ कहे, दूर बैठकर इरिना और चरती गायों पर नजर रखता है। कई बार तो वह पेड़ में छुपकर यह सब करता है। स्वामी जी ने उसे एक छोटी दूरबीन दी है। वह उसका उपयोग करता है। यह बात केवल अली हसन को पता है और किसी ग्वाले को नहीं।

## फेरू 'राधा' बनी घूम रही है

बृज में एक ऐसा श्रीकृष्ण भक्ति का पंथ है जहां हर श्रद्धालु खुद को कृष्ण की प्रिय राधा मानता है। राधा की तरह उनका अनुराग केवल श्रीकृष्ण से रहता है। उसमें पुरुष भी होते हैं और स्त्रियां भी। ऐसे ही एक सम्प्रदाय से 'राधे' नामक वह पुरुष है, जो हमेशा सज-धज कर राधा बना रहता है। वह धानी चुनरिया, बिंदी लगाता है, आंखों में काजल, नथनियां, माथे पर सिंदूर और पैरों में पायल पहनता है। कई बार वह हंसी का पात्र भी बन जाता है। इरिना

माता जी से उसे बहुत लगाव है। जब भी वह गौशाला में आता है तो इरिना के चरण छूता है। वह सभी गायों को भी 'राधाएं' मानता है।

**फेरू:** (गौशाला में कार्यरत एक मजदूर) अरे! राधाजी, आप बहुत दिनों में दर्शन दिए। कहीं कान्हा के साथ द्वारका तो नहीं चले गए थे?
**राधा:** (मीठी वाणी में) फेरू! हम तो राधा हैं, कान्हा के साथ न जाएंगे तो किसके साथ जाएंगे? राधा और कृष्ण एक ही तो हैं। राधा स्त्री है, और कृष्ण सबके अकेले खसम पुरुष। राधा के रस में सारा बृज डूबा है। (गाय की ओर इशारा करते हुए) ये सब भी तो गोपिकाएं हैं कृष्ण की! राधा की सखियां।
**फेरू:** वो तो ठीक है। अच्छा चल ये बताओ, राधे, ये औरतें वृन्दावन में यमुनातट पर पेड़ से छोटीछोटी चुनरी क्यों - बांधती हैं?
**राधा:** तू ही बता, फेरू, कौन ग्वालन नहीं चाहेगी कि कन्हैया से अपनी चुनरी हरवाए? कौन औरत नहीं चाहेगी दुष्टों द्वारा चीरहरण के समय कृष्ण से चुनरी बढ़वाकर द्रौपदी की तरह अपनी लाज बचाए, पगले!
**फेरू:** मैं अपनी धोती दे दूं तो क्या कृष्ण उसे भी विस्तार देंगे? (बेवकूफी का ढोंग करते हुए(
**राधा:** हां, फेरू, अगर तू राधा जैसा पागल हो, तो जरूर। नहीं तो कोई सवाल नहींकान्हा ने तुम जैसों का ठेका ले रखा है ... क्या? (राधे यह कहते हुए वहां से चला जाता है(
**फेरू**अरे भई (गाय की सेवा में खोए हुए बड़बड़ाते हुए) **:**, हम तो गांव के लोग हैं। हमें क्या मालूम, कन्हैया के पास हमारे लिए समय है या नहीं। उन्हें तो तुम गोपिकाओं और ग्वालिनों से फुर्सत नहीं। ऊपर से साधु...संत उसे चैन नहीं लेने देते-

## भगवान के सामने भावुक इरिना

इरिना तड़के ही पूजा-पाठ कर, गायों की सेवा में लग जाती। सुबह करीब 9:00 बजे, वह नाश्ते में शाकाहारी बाजरे की रोटी, मक्खन, दूध और फल का सेवन करती है। कई बार उसे बर्लिन में अपनी माँ की याद आ जाती कि कैसे माँ उसका ध्यान रखती थी। कई बार तो माँ उसके पीछे कुछ खिलाने के लिए मन्नतें करती थी। लेकिन वह शरारतवश छिप जाती थी, जिससे माँ परेशान हो जाती थी। पिता से शिकायत करती थी, और पिता कहते थे, "अरे, ये तो चिड़िया है, तू देखियो, अब तो मिल भी जाती है, बड़ी होकर मिलेगी भी नहीं।" यह याद कर इरिना भावुक हो जाती है।

## राष्ट्रीय कट्टर पार्टी कार्यालय

नेताजी पशुपालन विभाग के अफसर के साथ: "क्या सारा चारा तुम्हारी गाय ही खा जाएगी? इतना खर्च गायों की दवाई पर, हम भी तो हैं दुनिया में... हमारा क्या होगा रे... बूंदेल मित्रा? तो भई, कसाईखाने किसलिए हैं? तुम इतना

भी नहीं समझते... तुम्हें पशुपालन अधिकारी किस सूअर ने बना दिया? निरे गधे हो, गधे! हंहंहं... चलो, जैसा कहा जा रहा है, वही करो। समझे? तुम्हारा समय ठीक नहीं चल रहा है, मिश्रा... हमारे आदमी होकर ऐसे विचार रखते हो। पता नहीं कौन सी दशा चल रही है तुम पर... दारी के... टीके लगा देंगे टीके। पब्लिक पल नहीं रही, और तुम जानवरों का दर्द पाल रहे हो?" (हाथों से खैनी खाते हुए)

(जोरावर का प्रवेश)

नेताजी: "क्या खबर लाए हो, जोरावर? कितनी बचाई अभी तक?"
जोरावर: (दबी आवाज में) "सर, करीब 300 गायें..."
नेताजी: "बस तीन सौ?" (जोरावर की ओर पैसा बढ़ाते हुए) "कितना है?"
जोरावर: "जी जनाब, पूरा एक लाख।"
अफसर: "नेताजी, जानवरों की संख्या बढ़ती जा रही है, फिर उनकी दवाईयों का खर्चा भी बढ़ रहा है।"
नेताजी: "जोरा, ठीक से बताओ, कसाईखाने से कितना मिला? सच बताओ, वरना मेरे बहुत चेले हैं, कट्टा-छर्रा भी है तुम्हारी पोल खोलने के लिए।"
जोरावर: (सकपकाते हुए) "जी जनाब, बस एक लाख और था, वो आपके... बच्चों के लिए।"
नेताजी: (चिल्लाते हुए) "अबे, कितने बच्चे हैं मेरे? अगर मैं अपनी पर आ जाऊं, तो मुर्गा भी अंडा दे सकता है! ससुरों... हंहंहं... पतंगे की तरह जल जाओगे!"
(नेताजी सिगरेट की डिब्बी जोरावर की ओर बढ़ाते हुए)
नेताजी: "अरे जोरा, जैसे ये माचिस की तीलियाँ हैं न, वैसे ही मैं अपने चेले रखता हूँ। जब आग लगानी होती है, बस माचिस खोलनी भर है। तेरे जैसों में आग लगाने के लिए!"

जोरावर (घबराते हुए): "नेताजी, प्लीज! और पैसे आ जाएंगे... जल्द ही। आप चिंता न करें।"
नेताजी: "जोरा, हम चिंता नहीं करते। संतजी कहते हैं 'चिंता चिता समान है', भाईया! हंहंहं..."

**स्कूल जाते बच्चों की बातें**
सुबह के समय गाँव के कुछ बच्चे गाँव के बाहर स्थित प्राइमरी स्कूल में पढ़ने जा रहे हैं। वे जोरावर के घर के सामने से गुजरते हैं और देखते हैं कि जोरावर अपने पंडित, बेटे और पत्नी के साथ आँगन में गौ पूजा कर रहा है।
पहला बच्चा: "देखो, जोरावर अपने घरवालों के साथ गौ पूजन कर रहा है।"
दूसरा बच्चा: "रमेश, ये सब ड्रामा है। तुझे पता है, इसके लड़के मलखान (मल्लू) और बलजीत (बिल्लू) गौशालाओं

से गायों को कसाईयों को बेच देते हैं। ये तो केमिकल दूध का धंधा भी करते हैं, सच बता रहा हूँ, जहर है जहर!"
तीसरा बच्चा: "वे दारूबाज हैं सारे। कान्हा की पवित्र भूमि पर कलंक हैं ये लोग। जोरावर खुद को नेता बताता है और कहता है कि वो गौ रक्षा करता है।"
चौथा बच्चा: "देखो उस अंग्रेजन इरिना माताजी को, जो विदेश से आकर सारे सुख छोड़कर गायों की सेवा में लगी है। पता चला है कि तीन हजार गायें हैं, जिनमें से 250 अंधी हैं, उसकी राधा सुरभि गौशाला में।"
पहला बच्चा: "भैया, मुझे तो लगता है, ये गायों की 'मदर टेरेसा' है। गुरुजी कह रहे थे कि दूध से भी जरूरी है उसका गोबर, जिससे ऑर्गेनिक खेती होती है।"
(इतने में स्कूल की घंटी बजने लगती है और बच्चे दौड़कर प्रार्थना में शामिल हो जाते हैं।)

**जेम्स और हैरिएट का भारतीय गायों पर शोध**

रात के 10:30 बजे, दिसंबर का ठंडा मौसम। चारों ओर धुंध फैली हुई है, जिससे मथुरा (उत्तर प्रदेश) स्टेशन की ओर जाती ट्रेन धीमी गति से चल रही है। स्टेशन से करीब पांच किलोमीटर दूर ट्रेन सिग्नल न मिलने की वजह से अंधेरे जंगल में झटके से रुक जाती है।
ट्रेन में सफर करते जेम्स और हैरिएट सहित सभी यात्री जिज्ञासा से भर जाते हैं। तभी किसी यात्री से पता चलता है कि पटरी पर कहीं हादसा हुआ है, जिसके कारण ट्रेन दो से चार घंटे तक रुक सकती है।
थोड़ी देर बाद रेलवे के टिकट निरीक्षक आते हैं।
टिकट निरीक्षक: "व्हेयर आर यू गोइंग इन मथुरा?"
जेम्स: "राधा कुण्ड।"
टिकट निरीक्षक: "ट्रेन इज ऑलरेडी लेट सर, बट यू कैन डू वन थिंग, यू कैन गेट डाउन एंड नियर बाय देयर इज ए सर्विस रोड टू रिच राधा कुण्ड। यू विल डिफिनेटली गेट ए ट्रक टू राइड। इफ यू आर इंटरेस्टेड, आई कैन डिप्यूट ए रेलवे ऑफिसर टू एस्कॉर्ट यू।"
**जेम्स:** "ओ सर, इज इट सेफ?"
**टिकट निरीक्षक:** "येस सर, देयर इज नो प्रॉब्लम।"

(रेलवे कर्मचारी के साथ जेम्स और हैरिएट रेलवे ट्रैक के साइड रोड की ओर जाते हैं। राधा कुण्ड की ओर जाने वाले अंधेरे कोहरे के बीच कुछ ट्रकों की आवाजाही दिख रही है। रेलवे कर्मचारी एक ट्रक को रुकने का इशारा करता है, और ट्रक रुक जाता है। वह ट्रक चालक से अनुरोध करता है कि वह जेम्स और हैरिएट को राधा कुण्ड तक छोड़ दे। जेम्स और हैरिएट ट्रक में सवार हो जाते हैं। रास्ता सुनसान और डरावना है। ड्राइवर के नजदीक बैठे

उसके साथी ने कंबल ओढ़ रखा है, और ड्राइवर ने सिर पर गर्म चादर लपेटी है।
अचानक ट्रक ड्राइवर देखता है कि रास्ते के बीच में एक बड़ा पेड़ काटकर डाला हुआ है और उसके पास मुंह ढके हुए छह लोग खड़े हैं, जिनके हाथ में बंदूकें और लोहे की रॉड हैं। यह देखकर दोनों विदेशी डर जाते हैं। ये लुटेरों जैसे लोग ड्राइवर से ट्रक से उतरने का इशारा करते हैं। तभी उन लोगों में से एक आदमी पास आकर टॉर्च जलाता है और जोर से चिल्लाता है, "ये तो अंग्रेज हैं, पता नहीं साले कहां से पकड़कर लाए हैं।"

**दृश्य:**

**जोरावर:** (उनका सरदार)
अबे इन्हें छोड़, ड्राइवर और उसके साथी को नीचे उतार।
(वे दोनों नीचे उतर जाते हैं)
जोरावर ड्राइवर से कहता है, "इधर आ, साले, ट्रक में क्या भरा हुआ है? खोल इसे, जल्दी कर।"
इन लोगों ने ट्रक को घेर लिया और ड्राइवर ट्रक के पीछे का दरवाजा खोलता है। जोरावर ट्रक पर टॉर्च जलाकर देखता है कि उसमें कई घायल गायें और बछड़े ठुंसे हुए हैं, जो बेहोश हैं। यह देखकर जोरावर का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँच जाता है।

**जोरावर:**
"इसका मतलब सूचना सही थी, हरामजादों कसाई, अब मैं तुम्हें सिखाऊंगा। सुअर के बच्चो! एक बात मुझे बर्दाश्त नहीं, वह है मेरी माँ पर अत्याचार। क्या नाम है तेरा?"

**ड्राइवर:** (डरते हुए)
"कासिम, और ये कमीना जमील।"

**जोरावर:**
"अगले जन्म में भी तुम ये पाप नहीं करोगे। कन्हैया, राधे, जल्दी इन्हें पेड़ों से बांध दो।"
(ड्राइवर और उसका साथी जोरावर के पैरों पर गिरकर माफी मांगते हैं। ट्रक के पीछे से झांकते दोनों विदेशियों को कुछ समझ नहीं आ रहा कि हो क्या रहा है।)
ड्राइवर और उसके साथी को पेड़ों से बांधने के बाद उनकी पैंट नीचे उतार दी जाती है। यह दृश्य बड़ा डरावना है, जिसमें ड्राइवर और उसके साथी की बेरहमी से लोहे की रॉड से जोरावर पिटाई करता है। उनकी चीख-पुकार से जंगल गूंज उठता है। दोनों को अधमरा जानकर जोरावर अपने आदमियों से कहता है, "रास्ते में पड़े पेड़ को

हटाओ और इन्हें ले चलो। कन्हैया, इन दोनों अंग्रेजों को सम्मानपूर्वक राधा कुंड पहुंचा देना और ये घायल गायें इरिना की गौशाला में छोड़ आना।"

डरे हुए जेम्स और हैरियट ट्रक में सवार हो जाते हैं। उन्हें कोई परेशानी न हो, इसलिए जोरावर और उसके आदमी मोटरसाइकिल पर ट्रक के पीछे-पीछे चलते हैं।
रात के 1:00 बजे राधा सुरभी गौशाला के दरवाजे पर एक ट्रक पहुंचता है।

**दृश्य:**
जोरावर का आदमी ट्रक से नीचे उतरता है और गौशाला के लोहे के दरवाजे को खटखटाता है। न जाने घने अंधेरे में कंबल लपेटे राम खिलावन की आकृति दूर से सब गतिविधियां देख रही है। अंदर से टॉर्च जलाकर एक गार्ड पूछता है, इतने में जोरावर भी गेट पर पहुंच जाता है और गार्ड से कहता है, "जा रे, माता जी से कह दे कि घायल गाय आई है और दो विदेशी मेहमान भी मिलने आए हैं।"
**गार्ड:**
"माता जी विश्राम कर रही हैं।"
तभी पीछे से माता जी टॉर्च लिए खड़ी होती हैं और कहती हैं, "दरवाजा खोल दो।"
राधा सुरभी गौशाला का दरवाजा खोल दिया जाता है। जोरावर जेम्स और हेरियट को ट्रक से उतरने का इशारा करता है। तभी जोरावर के लोग और गौशाला के मजदूर घायल गायों को उतारने का कार्य शुरू कर देते हैं।
**इरिना (माताजी):** (जोरावर से पूछती हैं)
"जोरावर, कहां से लेकर आए हो?"
जोरावर खड़ा हुआ बीड़ी पी रहा है और कोई जवाब नहीं देता।
**इरिना:** (फिर पूछती हैं)
"मुझे साफ-साफ बताओ उन लोगों का क्या किया, जो इन गायों को लेकर आ रहे थे?"
जोरावर कोई जवाब नहीं देता। तभी माता जी की नजर उन डरे हुए विदेशियों पर पड़ती है। वे दोनों बहुत डरे हुए हैं। वे माता जी को अभिवादन करते हैं और अपना परिचय देते हैं। माता जी उनसे बात करती हैं, जिससे उन्हें पता चलता है कि जोरावर और उसके आदमियों ने ट्रक ड्राइवर और उसके साथी को अधमरा कर दिया। वह गुस्से में जोरावर के पास आती हैं।
**इरिना (माताजी):** (दृढ़ता से कहती हैं)

"जोरावर, पहले तो वे कसाई राक्षस बने और अब तुम बन गए हो। मुझे उनकी लोकेशन बताओ, नहीं तो मैं अभी पुलिस बुलाती हूं। वे कहां हैं?"

(इतने में डॉ. अली हसन आ जाते हैं और घायल गायों का उपचार करने लगते हैं।)

**इरिना:** (अपने पास खड़े एक सेवक से)

"यहां अली हसन इन गायों का उपचार करेगा और तुम कार निकालो। उन लोगों को देखने जाना है जिनके साथ जोरावर पागलपन कर आया है।"

**जोरावर:**

"माता जी! माता जी!"

**इरिना:** (डांटते हुए)

"चुप रहो, कब तक ये सब चलेगा? तुम अपने लड़कों को ही कंट्रोल कर लो। नेता बने फिरते हो, चलो अब।"

जोरावर माता जी की कार के पीछे मोटरसाइकिल पर सवार हो उसी दिशा में बढ़ जाता है, जहां घटना हुई थी।

इरिना अपने साथी के साथ उसी रास्ते पर कार से घायल ट्रक ड्राइवर और उसके साथी को देखने निकलती है और उन्हें अधमरी अवस्था में देखकर बहुत दुखी हो जाती है। दोनों घायलों को इलाज के लिए एक अस्पताल में भर्ती कराते हैं और सुबह 7:00 बजे गौशाला में वापस लौट आते हैं।

**जेम्स और हैरिएट को अली हसन द्वारा कव्वाली कार्यक्रम में आगरा ले जाना**

जेम्स और हैरिएट की ताजमहल देखने की इच्छा को ध्यान में रखते हुए, अली हसन उन्हें आगरा ले जाता है। उनके साथ बेला और उसकी सखी नेहा भी जाती हैं। वहां वे ताजमहल के पास आयोजित एक कव्वाली कार्यक्रम का आनंद लेते हैं।

**कव्वाली:** "तेरे रोज के वादे पे मर जाएंगे हम
तेरा चाँद सा मुखड़ा देख, घर जाएंगे हम
तेरे रोज के वादे पे मर जाएंगे हम
तू नूर है, नहीं दूर है, अरे! कहाँ खो गया है तू
सरूर है, मुझे यकीन है, पूरा तू जरूर है, तू जरूर है
अरे तू दिल में बैठा है, पागल हो जाएंगे हम।"

**ग्रेजुएट सांड:**

आस-पास के लोग अच्छी तरह जानते हैं कि 'ग्रेजुएट सांड' किसके घर पर है। कुछ दिन पहले एक देहाती गाँव में एक सांड खरीदने के लिए आया। उसे पता चला कि गाँव में वेद ताऊ के यहाँ दो बैल हैं और वेद ताऊ उन्हें बेच रहा है।

देहाती: "क्यों रे ताऊ! ये बैल बेच रहा है क्या? इस ताकतवर बैल की क्या कीमत है?"

ताऊ: "ये तो ₹5000 का है।"

देहाती: (दूसरे पतले बैल की ओर इशारा करते हुए) "और ताऊ वो मरियल सा?"

ताऊ: "भाई उसके ₹50000 लूंगा।"

देहाती: "क्यों, वो तो मरियल सा है?"

ताऊ: "क्योंकि वो ग्रेजुएट है।"

देहाती: (चकित होकर) "लो! अब सांड भी ग्रेजुएट होने लगे! कमाल है, कमाल!"

ताऊ: "भाई, मैं सच कह रहा हूँ। वो ग्रेजुएट है, उसकी डिग्री है, वो क्वालिफाइड है, इसलिए महंगा है।"

देहाती: (आश्चर्य से) "जिंदगी में पहली बार ग्रेजुएट सांड देखा... विश्वास नहीं होता!"

ताऊ का बेटा धर्मा भी वहां आता है।

ताऊ: "क्यों रे धर्मा, इसे बता कि हमारा मरियल ग्रेजुएट है कि नहीं। इसे विश्वास नहीं हो रहा।"

धर्मा: "हां जी, ये ग्रेजुएट है, इसके पास डिग्री है। मैंने कॉलेज से डिग्री लेकर आई थी, डिग्री खाट पर रखी थी और ये बैल उसे खा गया। अब डिग्री इसके अंदर है। जिसके पास डिग्री होगी, वही ग्रेजुएट होगा।"

**यादव की लड़की की शादी और गाय का दान:**

जोरावर के पड़ोस में सुरजे यादव परिवार की लड़की की शादी हो रही है, और ससुराल पक्ष ने कन्यादान में एक गाय/बछिया की मांग की है। यादव को चिंता शादी के आयोजन की नहीं है, बल्कि उसे बेटी के साथ एक दुधारु किस्म की गाय दान में देनी है।

अचानक, यादव का नौकर फकीरा एक देवनी नस्ल की काली गाय बछड़े के साथ आंगन में ले आता है।

यादव: (खुश होते हुए) "फकीरा, तुमने मेरी इज्जत रख ली।"

फकीरा: "कन्हैया की कसम, यादव जी, चार कोस से लाया हूँ।"

यादव की पत्नी: (भावुक होकर गाय को प्यार करते हुए) "हाय, मेरी राजो पराई हो जाएगी।"

**गांव में अमित का पत्र और उसकी माँ की विदाई:**

कन्हाई गाँव में किशोर का एक दोस्त अमित यादव सेना में भर्ती हो गया। ट्रेनिंग पर जाने से पहले उसकी माँ ने उसे आशीर्वाद दिया। अमित के जाने के बाद उसकी माँ बीमार हो गई और कुछ दिनों बाद उसकी मृत्यु हो गई। अमित जब घर वापस आया, तो उसे माँ द्वारा लिखी एक चिट्ठी मिली जिसमें लिखा था:

"बेटा अमित, तू चला गया, और मेरा दिल भर-भर आता है। मुझे लगता है, मैं अब नहीं बचूंगी। तू देश की सेवा करियो और गाय पार्वती का ध्यान रखियो।"

**कीर्तन टोली में पागल भक्त की जिद:**

बेला और उसकी सहेली कीर्तन मंडली के साथ भजन कर रही हैं। इतने में कीर्तना नाम की एक लड़की सबको चुप कराती है और चिल्लाती है: "बेला, जा पूछ अपनी सुदेवी माताजी से, कामधेनु कहाँ छुपा रखी है... मुझे खुद कन्हैया ने सपने में बताया है कि कामधेनु इरिना के पास है।"

**बेला का गीत और कदरदान:**

खेतों में दूर-दूर तक हरियाली छाई हुई है, काले-काले बादल आसमान में उमड़-घुमड़ रहे हैं। सावन की काली घटाएं वातावरण को मनमोहक बना रही हैं। मोरों की "पीहू-पीहू" आवाज़ से ऐसा लगता है जैसे वे भी इन घटाओं को बुलाने में जुटे हों। बादल जैसे बरसने को तैयार हैं।

बारिश की संभावना को देखते हुए, जोरावर की 19 वर्षीय बेटी "बेला" इरिना माताजी की गौशाला में गौसेवा कर रही है। वह बछड़ों को बिनौला और खली मिलाकर घास खिला रही है, और इसी बीच एक गीत गुनगुना रही है। बिजली की कड़क और मोरों की आवाज़ बीच-बीच में उसकी धुन में शामिल हो जाती हैं। बेला गाती है: "हमारे दरमियां कहां है दूरियां... ये देखो आसमां, जमीं पे झुक गया... मेरी प्यास में है सावन की हर घटा... माँ के आंचल में बना लें हम एक आशियां... न मिटा सके कोई, प्यार के निशां... हमारे दरमियां, कहां है दूरियां..."

पास खड़े अली हसन, बेला का गाना सुनकर खुश हो जाते हैं। लेकिन तभी इरिना माताजी को पास खड़ा देखकर, वे दोबारा गाय की सेवा में लग जाते हैं।

**गायों की जूं-चिचड़ी का इलाज...**

सुबह के 11 बजे हैं, सर्दियों की गुनगुनी धूप गौशाला में फैली हुई है। इरिना गौशाला का निरीक्षण कर रही हैं और उनके साथ डॉ. अली हसन, धवल और बेला चल रहे हैं।

इरिना: (चलते हुए) अली हसन, तुम्हें पता है, बहुत सी गायें जूं, चिचड़ी और खुजली की बीमारी से परेशान हैं। मैंने पहले भी कहा था कि इनका इलाज कर लो, नहीं तो यह बीमारी तुम्हें भी हो जाएगी। (सभी हंस पड़ते हैं)

अली हसन: जी, माताजी, मुझे पता है कि ये बैक्टीरिया से होने वाले रोग हैं। मैं सभी गायों के लिए 0.5 प्रतिशत मैलाथियन घोल का उपयोग करूंगा। बाद में रगड़कर इन्हें नहलाना होगा, या फिर तारपीन के तेल से भी ये कीड़े मर सकते हैं।

तभी अली हसन, राधे नाम के एक मजदूर को डांटते हुए कहते हैं:
"राधे, इन गायों का खुड़ेरा क्यों नहीं कर रहे? मोबाइल पर लड़कियों की फोटो देखना बंद करो! कहीं तेरी पैंट भी कोई ले गया तो तुझे खबर भी नहीं होगी।"

**नीम के पेड़ के नीचे लोटन बाबा...**

गांव में लोटन बाबा को सब जानते हैं, वो अक्सर मजाकिया बातें करते हैं। एक दिन, चौपाल के पास वह सो रहा था, तभी डॉ. अली हसन उसे जगाने आते हैं।

अली हसन: चाचा, चाचा, लोटन बाबा...

लोटन बाबा: अरे, क्या है डॉक्टर साहब?

अली हसन: चचा, आपकी राय लेनी है...

लोटन बाबा: मिल गई फुरसत अंग्रेजन की गायों से?

अली हसन: हां, चचा, अब मैं दूसरी मुसीबत में फंस गया हूँ...

**कट्टा और छर्रा की कुटाई के लिए सुपारी...**

कसाइयों के मोहल्ले में कट्टा और छर्रा की दोस्ती मशहूर थी। वे गौशालाओं से मरी हुई गायें लेकर उन्हें चमड़ा व्यापारियों को बेचते थे। इस बार उन्होंने मंदिर की गौशाला से एक जवान गाय और बछड़ा चुरा लिया था। गौ रक्षक दल को इसका पता चल गया, और जोरावर ने कट्टा और छर्रा की पिटाई के लिए बिल्ला नामक बदमाश को सुपारी दी। बिल्ला को कसाइयों के मोहल्ले में इन दोनों को ढूंढ़ना था और उन्हें बुरी तरह से पीटने का काम सौंपा गया था।

**इरिना भावुक हो जाती है...**

श्रीकृष्ण की स्तुति करते हुए इरिना अचानक रोने लगती है। पास खड़ी बेला चिंतित होकर पूछती है:
"माताजी, आप तो बहुत स्ट्रॉन्ग हैं, फिर रो क्यों रही हैं?"

इरिना: (आंसू पोंछते हुए) कुछ नहीं, माँ की याद आ गई। मैंने हाल ही में अपनी माँ को खोया है। आखिर मैं भी इंसान ही हूँ।

इसके बाद, इरिना गुलाब की पंखुड़ियां लेकर भगवान श्रीकृष्ण के विग्रह पर चढ़ा देती हैं।

**जमीन विवाद और बदमाशों की धमकी**

अक्टूबर 2020, तारों से भरी रात और समय रात 9:00 बजे। गौशाला का जनरेटर काम नहीं कर रहा था। इरिना लालटेन की रोशनी में ऑफिस में बैठकर कुछ लिख रही थी। गौशाला के मजदूरों को अंधेरे में काम करने में दिक्कत हो रही थी। इरिना टॉर्च लेकर गौशाला के खोरों (चारा खाने की जगह) का निरीक्षण करने निकली। वापस आकर, उन्होंने ऑफिस में चेयर पर बैठते ही देखा कि टेबल पर रखे सफेद रंग के फोन की रिंगटोन बजने लगी।

इरिना: (फोन उठाते हुए) कौन है?
(फोन से कठोर आवाज़ आती है)
बदमाश: "सूदेवी बोल रही हो? तू अकेली-अकेली खूब पैसे कमा रही है, है न?"
इरिना: (सकपकाते हुए) "कौन हो? क्या मतलब है तुम्हारा?"
बदमाश: "मतलब तुझे जल्द ही समझ में आ जाएगा। तुझे तेरा कन्हैया भी नहीं बचा पाएगा। देख, तेरी टेबल पर क्या रखा है, लिफाफे में देख। गोली मार दूंगा, समझी? सारा गौ सेवा का भूत उतर जाएगा। राधाकुंड पर पाँच लाख रुपये पहुँचा देना। और सुन, पुलिस को खबर मत करना, नहीं तो न तेरी गैया बचेगी, न तेरी माँ। मैं सुपारी नहीं देता, खुद ही शिकार करता हूँ। समझी?"
इरिना: (दृढ़ आवाज में) "तुम कुछ नहीं कर पाओगे। नाम बताने की हिम्मत तो करो!"
बदमाश: "क्या, भूल गई पिछले साल तेरे मजदूरों की पिटाई किसने की थी? अब भी नाम पूछ रही हो, पगली?"
(बदमाश फोन काट देता है)

इरिना जल्दी से लिफाफा खोलकर देखती है। लिफाफे में एक पत्र के साथ रिवॉल्वर की दो गोलियां रखी थीं, और पत्र में लिखा था: "सूदेवी, तीसरी गोली तेरे लिए। पैसे का इंतजाम कर ले।"

तभी दरवाजे पर अचानक आवाज होती है। इरिना डरते हुए पूछती है:

"कौन है?"

बाहर से कोई जवाब नहीं आता। फिर दरवाजे पर दोबारा आवाज होती है।

इरिना: "राधे?"

(दरवाजा खोलती है, सामने राम खिलावन खड़ा होता है।)

इरिना कुछ नहीं बोल पाती, आँखों में आँसू भर आते हैं। राम खिलावन टेबल से पत्र उठाकर बिना कुछ कहे वहाँ से चला जाता है।

## पुलिस इंस्पेक्टर और पत्रकार त्रिपाठी

(गौशाला में)

त्रिपाठी (पत्रकार): "सर, ये हद हो चुकी है। आखिर पुलिस कर क्या रही है? मैंने एसपी मथुरा को भी बताया है, और देखिए, अखबार में सबकुछ छपा है। आपको अच्छी तरह पता है, धमकी कौन दे रहा है। लेकिन आप उस तक पहुँचते ही नहीं हैं। मज़ाक बना रखा है!"

पुलिस इंस्पेक्टर: (समझाते हुए) "अरे त्रिपाठी जी, इरिना जी की हम बहुत इज्जत करते हैं। हमें ऊपर से आदेश मिल चुके हैं। कानून अपना काम कर रहा है। कानून के हाथ बहुत लंबे होते हैं, त्रिपाठी जी। इरिना जी विदेश से आकर इतना महान कार्य कर रही हैं। आपको पता होना चाहिए कि भारतीय दंड संहिता की धारा 147 (उपद्रव), 452 (अवैध घुसपैठ और मारने की धमकी), और 386 (मारने की धमकी देकर उगाही) के तहत मामला दर्ज किया गया है। कार्यवाही में समय तो लगता ही है। एफआईआर के अनुसार, कान्हा शर्मा, प्रीती शर्मा, और बलजीत के नाम दर्ज हैं, और जल्द ही उन्हें गिरफ्तार कर लेंगे।"

त्रिपाठी (पत्रकार): "सर, जब तक कोई ठोस कार्यवाही नहीं होती, सच पूछिए तो हमें विश्वास नहीं है। आप केवल औपचारिकता पूरी कर रहे हैं। बदमाशों को तुरंत पकड़िए, नहीं तो कल की खबर देख लीजिएगा।"

पुलिस इंस्पेक्टर: (चिढ़ते हुए) "ठीक है, हमें अपना काम करने दीजिए, प्लीज।"

## सिंगापुर से लौटे आईटी इंजीनियर किशोर

मथुरा के राधाकुंड के कन्हाई गांव के पंडित दीनानाथ का छोटा बेटा किशोर, आगरा के इंजीनियरिंग कॉलेज में पढ़ाई कर, सिंगापुर की एक कंपनी में नौकरी कर रहा था। उसे एक अच्छा पैकेज मिला था, और शुरुआती दिनों में वह खुश था। गांव में उसकी खूब तारीफ होती। लेकिन सिंगापुर में दिन-रात कंप्यूटर और डिजिटल तकनीक पर काम करने से उसका मानसिक तनाव बढ़ने लगा। करीब छह महीने बाद वह बीमार पड़ गया। विदेश का खानपान

उसके शुद्ध शाकाहारी व्यक्तित्व पर कुप्रभाव डाल रहा था। पूजा-पाठ और पारिवारिक संस्कार भी छूटते जा रहे थे, जिससे मानसिक अशांति बढ़ने लगी, और वह भारत लौट आया।

पंडित दीनानाथ उसे इरिना की गौशाला ले गए और हकीम अजमल खान से भी उसका इलाज कराया। किशोर ने राधा सुरभि गौशाला में काम करना शुरू कर दिया। गौ सेवा, गौशाला का हिसाब-किताब करते हुए वह सारा दिन इरिना के सहयोग में रमा रहता।
एक दिन उसका दोस्त धवल, जो कि आगरा के सरकारी अस्पताल में मनोचिकित्सक था, उससे मिलने आया।

धवल: "अरे यार, तुम सिंगापुर से कब आए? क्या हुआ? सुना था तुम्हारी नौकरी तो अच्छी थी।"
किशोर: "हां यार, नौकरी अच्छी थी, पर मुझे आना पड़ा। आईटी कंपनी थी, रात की ड्यूटी, गलत खान-पान, सब मिलाकर जान बचाने को लौटना पड़ा। अब यहां गौ सेवा में आनंद मिल रहा है।"
धवल: "हां, सही कह रहे हो। पूर्ण फिटनेस के लिए शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य जरूरी है। सब एक-दूसरे पर निर्भर हैं। आजकल लोग कंप्यूटर, मोबाइल, एआई और फास्टफूड से पागल हो रहे हैं। जो शारीरिक मेहनत नहीं करते, उन्हें अपने स्वास्थ्य के बारे में सोचना भी नहीं चाहिए।"

किशोर: "तुम सही कह रहे हो। जो लोग योग नहीं कर सकते, वे मोबाइल और अन्य आदतों में खो जाते हैं। इस छोटी सी जिंदगी में सबके लिए सबकुछ नहीं होता। किसी के लिए मांस है, तो किसी के लिए घास। कोई भूख से मर रहा है, तो कोई अधिक खाने से। संयमित जीवन ही सबसे बेहतर होता है।"

धवल: "सही बात है, योग का पहला कदम है एकाग्रता और अनुशासन। अगर मन ही भटकता रहे तो न एकाग्रता मिलेगी और न ध्यान। आजकल बड़े-बड़े साधु-महात्मा भी मोबाइल के जाल में फंस चुके हैं। खिलाड़ियों ने मैदान छोड़कर नेट और मोबाइल पर खेलना शुरू कर दिया है। अगर सिपाही मोबाइल में खोया रहेगा, तो चोर उसकी पैंट भी उतार लेगा। अतिवाद हमेशा नुकसानदेह होता है। सबसे बड़ा खतरा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से है। इसका सही इस्तेमाल जरूरी है।"

किशोर: "हां, सही कहा। मैं भी आजकल 'आध्यात्मिक मानव और डिजिटल समाज' पर रिसर्च कर रहा हूं। मेरे अनुभव में योग और गौ सेवा का गहरा संबंध है। भारत जैसे देश में युवाओं को सप्ताह में एक दिन गौ सेवा में लगाना चाहिए। इससे गौ पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा और जिम को गौशालाओं से जोड़ा जा सकता है। पुराने जमाने में अखाड़े गौशालाओं से जुड़े होते थे।"

खेत-खलिहानों और गौसेवा से जुड़कर लोग शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति कर सकते हैं, जो देश के विकास के लिए जरूरी है। विदेशियों को भी यह समझना चाहिए। अनिरूधाचार्य, जोरावर, हकीम अजमल, डॉ. अली हसन और किशोर के बीच बातचीत हो रही है। स्वामी का प्रवचन वृंदावन में उनके आश्रम में चल रहा है, जहाँ वे गाय सेवा के महत्व के बारे में करीब 300 श्रद्धालुओं को सत्संग दे रहे हैं। नेता जोरावर, हकीम अजमल, अली हसन और किशोर, आचार्य से एकांत में मिलना चाहते हैं क्योंकि उनके पास कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न हैं, जिनका समाधान चाहिए। आचार्य के सहयोग से एक अलग कमरे में बातचीत की व्यवस्था की जाती है।

आचार्य आते हैं। चूंकि अली हसन आचार्य की गौशाला में गायों का इलाज करता है, आचार्य उसे अच्छी तरह से जानते हैं। वे स्थानीय नेता जोरावर से भी परिचित हैं। अली हसन अपने पिता हकीम अजमल का परिचय किशोर से कराता है।

आचार्य: "हां, अली हसन, बताओ इरिना की गौशाला कैसी चल रही है? अब कितनी गाय हैं? माता जी तो बहुत मेहनत करती हैं। मैंने सुना है कि दूसरी गौशालाएं भी अपने घायल और बीमार पशुओं को माताजी के पास छोड़ जाती हैं।"

अली हसन: "आचार्य जी, समय देने के लिए धन्यवाद। गौशाला ठीक चल रही है। लगभग 3000 गायें हैं, जिनमें से करीब 200 अंधी हैं। घायलों और बीमार गायों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।"

आचार्य: "हकीम साहब, सुना है आपकी भी गौशाला है।"

हकीम अजमल: "जी, जनाब। गाय तो जन्नत से आई है, वह वो फ़रिश्ता है जिसे खुदा इंसानों को देकर निश्चिंत हो गया होगा। जब मुस्लिम भाई गाय खाने की बजाय उसकी सेवा से जुड़ेंगे, तभी बरकतें मिलेंगी।"

आचार्य: "हकीम साहब, क्या कहें, आए दिन गाँव-शहरों से जो खबरें आती हैं, हमें बड़ी पीड़ा होती है। लोग मुर्गी जो सोने का अंडा देती है, उसे ही मार कर खाना चाहते हैं। गाय का दूध, घी, मूत्र और गोबर संजीवनी हैं। बच्चों, बुजुर्गों और जवानों के लिए यह उत्तम हैं। किसानों और सेना के जवानों के लिए भी यह जरूरी है।"

अली हसन: "जनाब, आप बिल्कुल सही कह रहे हैं। इसमें कोई शक नहीं।"

आचार्य: "किशोर, तुम तो कंप्यूटर इंजीनियर थे। क्यों छोड़ आए विदेश की धरती और अच्छा पैकेज?"

किशोर: "आचार्य जी, वहाँ सब कुछ था लेकिन जीवन नहीं था। असली आनंद और जीवन यहीं है। रोजगार जीवन में होना चाहिए, लेकिन रोजगार ही जीवन नहीं है।"

(इतने में आचार्य का शिष्य पेड़े की प्लेट और दूध के गिलास सबके लिए लाता है। आचार्य प्रेम से ग्रहण करने के लिए आग्रह करते हैं।)

आचार्य: (जोरावर की ओर देखते हुए) "अरे नेताजी, अब शहर के क्या हालात हैं? कल क्या हो गया था? सुना है दंगा होते-होते रह गया।"

जोरावर: "आचार्य जी, कल बड़ा बवेला था। यदि सही समय पर पुलिस और अजमल भाई, अली हसन को लेकर न पहुँचते और इरिना को न ले जाते, तो न जाने कितने लोग मारे जाते।"

(जोरावर विस्तार से उस दिन की घटना के बारे में बताते हैं।)

आचार्य: "भगवान का शुक्र है कि स्थिति संभल गई। निर्दोषों को भुगतना पड़ता है। सनातन धर्म में गाय को माँ माना गया है। उसका अपमान सहन नहीं होता। गाय तो जीवनदायिनी है।"

(इसके बाद, आचार्य और अन्य सभी वार्ता को समाप्त करते हैं, और चर्चा एकता, भाईचारे और देश की उन्नति की दिशा में आगे बढ़ने की आवश्यकता पर होती है।)

गैया को देख आ, कहीं खूंटा तो नहीं तोड़ लिया... (लड़का वापस आता है)
लड़का: चाचा, सब ठीक है।
(थोड़ी देर बाद...)
फरीद: "अरे छोरा, एक पान ले आयगो क्या? ले पैसे... और सुन, चुना कम लगाना। 120 नंबर पीली पत्ती लेना, तुने तो पाजामा पहन रखा है... जल्दी करियो।"

(फरीद ताश खेलने में मशगूल हो जाता है। लड़का झुंझलाकर परेशान हो जाता है, आक्रोश में अपना पाजामा निकालकर फरीद के कुर्ते में चुपचाप ठूंसता है और कच्छे में ही बाहर निकलते हुए कहता है)
भोले: "लो बेवड़ों, ये पाजामा ही रख लो। तुम्हारी ऐसी-तैसी! काम धंधा तो है नहीं, फालतू कहीं के।"
(लड़के के जाने के बाद फरीद अपनी जेब से पाजामा खींचता है, सबको दिखाते हुए कहता है)
फरीद: "पंडित जी, देखी तमीज? यही है यंग जनरेशन। बड़ों की कोई इज्जत नहीं, ससुरी इच्छाधारी पाजामा है ये।"
(त्रिपाठी और उपाध्याय तेजी से हंसने लगते हैं और ताश खेलने में मशगूल हो जाते हैं। इतने में चौपाल

में स्कूटी पर जैकेट पहने चतुर्वेदी दाखिल होता है, वह सबको 'राधे-राधे' करता है और अपने छाते को दीवार पर खूंटी से टांगते हुए कहता है)
चतुर्वेदी: "तुम लोग ताश खेलने में मशगूल हो, और शहर में खतरनाक दंगा होते-होते बचा।"
(सब हैरान होकर उसकी ओर देखने लगते हैं)
त्रिपाठी: "काहे बात भइया? ऐसा नहीं होना चाहिए। प्रशासन क्या कर रहा था? पुलिस क्या भांग खा रही थी, ससुरी?"
चतुर्वेदी: "अरे, बात इतनी सी थी... हकीम अजमल खान का बेटा, जानवरों का डॉक्टर अली हसन, उधर भीड़ के सामने न आता तो बवाल हो जाता। पता नहीं कितने लोग ऊपर चले जाते, कसम कन्हैया की! महाभारत हो जाता, ससुरो, कृष्ण की नगरी में।"
उपाध्याय: "भइया, तनिक सही से समझाओ।"
चतुर्वेदी: "चाचा, राधे मंदिर में सुबह रामबाबू की बीवी पंडितानी पूजा करने गई, तो मंदिर के सामने एक गाय की कटी टांग का टुकड़ा पड़ा देखा। उसने पुजारी जी को बताया, और देखते ही देखते बवाल हो गया। दंगा होने ही वाला था। तब जोरावर नेता के साथ इरिना माता और हकीम अजमल अपने बेटे अली हसन के साथ आए। अली हसन ने बताया कि कल रात एक एक्सीडेंट से घायल गाय को दफनाने के लिए ले जा रहे थे, तभी उसका पैर गिर गया था। तब जाकर भीड़ को समझ आई और हालात मुश्किल से काबू में आए।"
फरीद: "पुलिस क्या कर रही थी?"
चतुर्वेदी: "अरे भइया, आजकल पुलिस सब मोबाइल में लगी रहती है। कसम से, उनकी पैंट भी अपराधी निकाल ले जाए तो उन्हें खबर न हो। सब ससुरे सुंदरियों के फोटो देखने में लगे रहते हैं।"
(सब हंसने लगते हैं)

(त्रिपाठी गम्भीर होकर कहता है)
त्रिपाठी: "शहर में कसाइयों का एक गिरोह भी सक्रिय है, जो बेगुनाह गायों को जहर देकर मारता है या सड़क पर जानबूझकर ट्रक से टक्कर मारता है। फिर बचाने का नाटक कर, उन्हें कसाईखाने में बेच देता है और खूब पैसा कमाता है। घोर पाप है भइया।"
(सबकी नजरें फरीद पर टिक जाती हैं, लेकिन वह फिर ताश में खो जाता है। इसी बीच 'भोले' पाजामा उठाकर भाग जाता है, और किसी को पता भी नहीं चलता।)

बलजीत: (गौशाला के काम करने वाले मजदूरों को धमकाते हुए) "सालों, भागो यहाँ से, नहीं तो एक-एक की जान ले लूंगा।"

सभी मजदूर डरकर भाग खड़े होते हैं, और चारों ओर आतंक फैल जाता है। गाय-बछड़े भी तनाव में आ जाते हैं। इरिना माता जी, गौशाला के गेट के पास के ऑफिस में खड़ी, यह सब देख रही होती हैं।

डॉ. अली हसन एक गाय के पैर में दवाई लगा रहे होते हैं। तभी मलखान लाठी से उन पर वार करता है और कहता है, "साले, तेरा इलाज तो मैं करूंगा!" तभी अचानक कुछ ऐसा होता है कि चारों ओर से गायें मलखान पर टूट पड़ती हैं। बलजीत उसे बचाने की कोशिश करता है, लेकिन एक गाय का सींग उसके पेट में धंस जाता है। यह देख इरिना माता जी पीड़ा से चिल्लाती हैं, "अली हसन, उसे बचाओ!" लेकिन जब तक अली हसन वहाँ पहुंचते, मलखान की मृत्यु हो जाती है।

उधर, गायें दूसरे बदमाशों पर भी हमला कर देती हैं और उन्हें दूर तक खदेड़ती हैं। कुछ समय बाद जोरावर अपने आदमियों के साथ मलखान की लाश के पास पहुँचता है। वह रोते हुए चिल्लाता है, "इरिना, मिल गया न इनाम! मेरे बेटे को मरवाकर अब तो खुश हो?" और जोर-जोर से विलाप करने लगता है। इरिना मौन खड़ी रहती हैं। तभी पुलिस वहाँ पहुँचती है और भागते बदमाशों को पकड़ लेती है। पुलिस इंस्पेक्टर इरिना से पूछताछ करने लगते हैं। पुलिस फोटोग्राफर लाश की तस्वीरें ले रहे होते हैं। थोड़ी देर बाद टीवी चैनल की कैमरा टीम रिपोर्टिंग करने लगती है।

गायें अब शांत हो जाती हैं। शव-वाहन मलखान की लाश को लेकर चला जाता है। राम खिलावन बिना कुछ बोले चुपचाप जीने से उतरकर अपनी टी-स्टॉल में चला जाता है।

## गाय और उसका असली दोस्त

आज डॉ. अली हसन के साथ उनके दोस्त डॉ. सत्यपाल किसी विशेष गाय की बीमारी का इलाज करने आए हैं। उनके साथ उनका चार साल का प्यारा सा बेटा भी है। वह गोल-मटोल और बेहद मोहक है। इरिना माता जी से गाय के विषय में बात करते हुए उनका बेटा गौशाला में गायों के साथ खेलने में मशगूल हो जाता है। गायें उसे बहुत प्यार कर रही होती हैं। बच्चा निडरता से गाय के दोनों सींग पकड़कर खेल रहा है, और गाय भी उसके साथ मस्ती में है।

तभी डॉ. सत्यपाल को ध्यान आता, "अक्षित कहां गया?" वे सब उत्सुकता से ऑफिस से बाहर देखते हैं। अली हसन हंसते हुए कहते हैं, "अरे! वो रहा, अक्षित नहीं, उसे एक और माँ मिल गई और वो बन गया बछड़ा।" सब हंस पड़ते हैं।

## महिला साधु की इरिना से मंत्रणा

महिला साधु: "इरिना, आपकी भक्ति के सामने हम नतमस्तक हैं। साधना से हमें पता चला है कि आपके पास स्वर्ग से प्रकट हुई पवित्र कामधेनु भी है। हमें सूचना मिली है कि कुछ असामाजिक तत्व यहाँ सक्रिय हो रहे हैं। आपने 'कामधेनु' की रक्षा करनी है, उसे कोई आहत न करे।"

इरिना: "वह खुद अपनी रक्षा कर सकती है, और इस पृथ्वी की भी।"

साधवी चुपचाप हाथ जोड़कर वहां से चली जाती हैं।

बटोड़े लाइन से रोड के किनारे लगे थे। उनमें से एक बड़े बटोड़े को खोखला किया गया था, जिसमें एक छोटे कद की गाय को छुपाया गया था। सभी पशु गौशाला में लौट आए, लेकिन जब इरिना ने सबको चेक किया, तो कामधेनु गाय गायब थी। इरिना चिंता में भरकर फर्श पर बैठ जाती है।

**इरिना**: "अरे! कामधेनु कहां गई?"

यह सुनकर सभी चिंतित हो जाते हैं, और ग्वाले उसे ढूंढने के लिए इधर-उधर दौड़ने लगते हैं। चारों ओर अफरा-तफरी मच जाती है। उधर, बदमाश कामधेनु को एक शव-वाहन में बिठाकर जोरावर के निर्दिष्ट स्थान पर पहुंचा देते हैं। नेता को जब यह खबर मिलती है, तो वह बहुत खुश हो जाता है और जोरावर की तारीफ करता है।

कामधेनु के अपहरण की खबर पूरे क्षेत्र में आग की तरह फैल जाती है। देशभर के सनातन संगठन, गौसेवक, और गौशालाएं हवन-पूजन शुरू कर देते हैं। इरिना, बेला और अन्य लोग सदमे में आ जाते हैं और भावुक होकर भगवान श्रीकृष्ण की पूजा-अर्चना और कीर्तन में लग जाते हैं।

**बेला**: (अपने पिता जोरावर से) "ये आपने अच्छा नहीं किया, इसका दंड मिलेगा, पिताजी।"

**जोरावर**: (गुस्से में) "चुप रह पगली, अगर मुंह खोला तो जान से मार दूंगा। गौशाला में जाने की कोई जरूरत नहीं है!"

दूसरी ओर, कामधेनु को नेता ने एक अति सुरक्षित स्थान पर रखवाया, लेकिन उसने खाना-पीना छोड़ दिया। अली हसन, किशोर, धवल, बेला, और अमित, हकीम अजमल खान के साथ उस विरान इलाके में कामधेनु को ढूंढने निकलते हैं। पहाड़ी क्षेत्र पार करने के बाद, वे साधुओं की वेशभूषा में छिपकर सुरक्षा पोस्ट पार करते हैं। वहां 7-8 कमांडो टाइप लोगों से लड़ाई होती है, जिन्हें निष्क्रिय कर दिया जाता है।

अमित की सैन्य ट्रेनिंग काम आती है, और वे दूरबीन से देखते हैं कि कामधेनु एक निश्चित स्थान पर बंधी हुई है। सुरक्षा में सशस्त्र साधु हैं, और बाकी साधु हवन और प्रसाद की तैयारी में व्यस्त हैं। अचानक नेता, जोरावर, कट्टा, और छर्रा वहां पहुंचते हैं, जो कामधेनु की स्थिति देखकर बहुत खुश होते हैं।

रात के अंधेरे का फायदा उठाकर, अमित और उसकी टीम कामधेनु को बचाने का प्लान बनाते हैं। बेला प्रसाद में बेहोशी का पदार्थ मिला देती है, जिससे साधु और बाकी लोग बेहोश हो जाते हैं। कामधेनु को सावधानीपूर्वक बाहर निकाला जाता है, और एक हेलीकॉप्टर, जो सूदेवी माताजी लेकर आती हैं, वहां उतरता है। पायलट गजाला खान, हकीम अजमल खान की बेटी, कामधेनु और सबको सुरक्षित निकाल लेती हैं।

सुबह होते ही, लोगों को कामधेनु के लौटने की खबर मिलती है। नेताजी, जोरावर, कट्टा, और छर्रा को जब होश आता है, वे पुलिस की गिरफ्त में होते हैं। लोटन बाबा स्कूटी पर आकर नेता को थप्पड़ मारते हैं और उसे श्राप देते हैं। पुलिस उन्हें काबू में कर लेती है और जेल भेज देती है।

कामधेनु को इरिना के पास सुरक्षित वापस लाया जाता है। इरिना खादी वस्त्र पहनकर गहनों से सजी थाली के साथ कामधेनु की ओर जाती हैं। बेला उनसे पूछती है,

**बेला**: "माताजी, ये सुन्दर गहने किसके लिए ले जा रही हैं?"

**इरिना**: "ये गहने कामधेनु के लिए हैं, उसे सजाने का समय आ गया है।"

सब लोग उत्सुकता से कामधेनु को देखने की कोशिश करते हैं, लेकिन इरिना केवल राम खिलावन, अली हसन, और बेला को साथ लेकर जाती हैं। तभी एक साधु शंख बजाते हुए 'हरे-रामा, हरे-कृष्णा' का कीर्तन करते हुए निकलते हैं। सब लोग खुश होते हैं और माहौल में शांति और भक्ति की भावना व्याप्त हो जाती है।